

स्यूट स्पेशलिस्ट
फेअर डील

टेलर्स

ब्लेजर कोट, सफारी
एवं पेन्ट-शर्ट

12, सुभाष मार्ग, इन्दौर
फोन 2541474

प्रोफ़. अशरफ़ खान मेव

27 साल बाद कांग्रेस में 'घर वापसी', शरद पवार की पार्टी के विलय पर बड़ा खुलासा!

मुंबई। महाराष्ट्र की राजनीति से इस समय की सबसे बड़ी और धमाकेदार सियासी खबर सामने आ रही है। शरद पवार की पार्टी और कांग्रेस के बीच विलय को लेकर बेहद गंभीर चर्चा शुरू हो चुकी है। इस बात की आधिकारिक पुष्टि खुद कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और महाराष्ट्र विधानसभा में विपक्ष के पूर्व नेता विजय वडेटीवार ने की है। एनडीटीवी से खास बातचीत में विजय वडेटीवार ने इस संभावित विलय पर मुहर लगाते हुए कहा शरद पवार की पार्टी के कांग्रेस में विलय को लेकर हमारे केंद्रीय आलाकमान के साथ बातचीत चल रही है। जो लोग भी कांग्रेस और शरद पवार की धर्मनिरपेक्ष विचारधारा में विश्वास रखते हैं, उन सभी का हमारी पार्टी में हमेशा स्वागत है।

सियासी गलियारों में इस खबर के

बाद से हलचल तेज हो गई है। गौरतलब है कि साल 1999 में शरद पवार ने कांग्रेस से अलग होकर 'राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी' (NCP) का गठन किया था। लेकिन समय का चक्र ऐसा घूमा कि साल 2023 में उनके भतीजे अजीत पवार ने बगावत कर दी और एनसीपी को दो फाड़ कर दिया। अजीत पवार अपने समर्थक विधायकों के साथ महाराष्ट्र की बीजेपी-शिवसेना सरकार में शामिल हो गए थे। भतीजे की बगावत के बाद शरद पवार की पार्टी (NCP-SP) महाविकास अघाड़ी में कांग्रेस के साथ मिलकर चुनाव लड़ रही है, और अब दोनों दलों के पूरी तरह एक होने की सुगबुगाहट ने महाराष्ट्र से लेकर दिल्ली तक की राजनीति में

नया उबाल ला दिया है।

ममता बनर्जी और उद्धव ठाकरे जैसे क्षेत्रीय नेताओं को हाल ही में राजनीतिक झटके लगे हैं। उनके सांसदों ने अपनी



मूल पार्टियों को छोड़कर अलग गुट बनाने का फैसला किया है और इसी माहौल में कांग्रेस के साथ संभावित विलय की चर्चा हो रही है। सूत्रों के मुताबिक, नई दिल्ली में शरद पवार की

अगुवाई वाली एनसीपी के कांग्रेस में विलय को लेकर वरिष्ठ नेतृत्व स्तर पर बातचीत अब अंतिम चरण में है और इसमें सकारात्मक प्रगति हुई है। सूत्रों का यह भी कहना है कि कांग्रेस लीडरशिप ने NCP (शरदचंद्र पवार) के उन विधायकों और सांसदों को हरी झंडी दे दी है जो कांग्रेस में शामिल होना चाहते हैं। सूत्रों के मुताबिक, 85 साल के शरद पवार और उनकी पार्टी के राजनीतिक भविष्य को लेकर दो अलग-अलग राय सामने आ रही हैं। कहा जा रहा है कि पार्टी का एक धड़ा नेशनल डेमोक्रेटिक अलायंस (NDA) में शामिल होने के पक्ष में है। उनका तर्क है कि पार्टी की संसदीय ताकत उसे NDA का हिस्सा

बनने में मदद कर सकती है।

इस खेमे के नेताओं का यह भी मानना है कि विपक्ष में रहने के कारण राज्य और केंद्र, दोनों स्तरों पर विकास कार्यों और अपने चुनाव क्षेत्र से जुड़े मुद्दों को हल करवाना मुश्किल हो गया है। सूत्रों का यह भी कहना है कि दिवंगत डिप्टी सीएम अजित पवार चाहते थे कि अगर ऍड के दोनों गुट फिर से एक हो जाएं, तो भी NDA के साथ ही बने रहा जाए, क्योंकि वे पहले से ही इस गठबंधन का हिस्सा थे। हालांकि, उनके निधन के बाद दोनों गुटों के फिर से एक होने की संभावना कम हो गई है, लेकिन पार्टी के इस धड़े का मानना है कि ँ में अलग से शामिल होने में कोई बाधा नहीं आएगी। हालांकि, पार्टी के भीतर एक दूसरा गुट कांग्रेस के साथ विलय के पक्ष में बताया जाता है।

हरित विकास, निवेश और रोजगार...इसी दिशा में आगे बढ़ रही हमारी सरकार : मुख्यमंत्री

भोपाल : स्वच्छ एवं हरित ऊर्जा उत्पादन क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए मध्यप्रदेश ने सोमवार को हरित विकास की दिशा में एक बड़ा कदम बढ़ाया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने केंद्रीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री प्रल्हाद जोशी के साथ नीमच में 500 मेगावॉट क्षमता वाले नीमच सोलर पार्क तथा 450 मेगावॉट क्षमता वाले शाजापुर सोलर पार्क का लोकार्पण किया। कार्यक्रम में महिला एवं बाल विकास तथा नीमच जिले की प्रभारी मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री राकेश शुक्ला सहित जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव एवं केंद्रीय मंत्री श्री जोशी ने 1,553.98 करोड़ रुपये की विभिन्न औद्योगिक इकाइयों एवं विकास कार्यों का भी भूमि-पूजन और लोकार्पण किया। इन परियोजनाओं से प्रदेश में औद्योगिक निवेश को नई गति मिलने के साथ स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। विभागीय अधिकारियों ने बताया कि 550 मेगावॉट क्षमता वाला आगर सोलर पार्क भी निर्माणाधीन है, जिसकी इकाइयों के लिए 2.44 और 2.45 रुपये प्रति



यूनिट की दरें प्राप्त हुई हैं। इन परियोजनाओं के पूर्ण होने के बाद मध्यप्रदेश देश के अग्रणी सौर ऊर्जा उत्पादक राज्यों में अपनी स्थिति और मजबूत करेगा तथा स्वच्छ ऊर्जा, पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान देगा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने नीमच जिले में करीब 160 करोड़ रुपये की लागत से 98 विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश का हरित विकास हमारा लक्ष्य है। हरित विकास के जरिए प्रदेश में अधिकाधिक मात्रा में निवेश लाने और इसके जरिए रोजगार के नए अवसर पैदा करने के लिए हम तेजी से काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश बिजली उत्पादन में आत्मनिर्भर बनने के साथ-साथ अब स्वच्छ, सस्ती और

टिकाऊ ऊर्जा से इस क्षेत्र में देश का अग्रणी राज्य बनने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि नीमच, मंदसौर, रतलाम, उज्जैन उत्तर-पश्चिमी मध्यप्रदेश के नए औद्योगिक ग्रोथ इंजन के रूप में विकसित हो रहे हैं। नीमच न केवल मध्यप्रदेश का, बल्कि ग्रीन पॉवर सेक्टर का ग्लोबल कैपिटल बन रहा है। उन्होंने बताया कि यहां देश का सबसे बड़ा पंप स्टोरेज बन रहा है। नीमच जिले में कुल 675 मेगावाट क्षमता की सौर परियोजनाएं कार्यशील हैं और लगभग 1 हजार 952 से अधिक मेगावाट क्षमता की सौर परियोजनाओं का निर्माण कार्य तेजी से जारी हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि नीमच में नए सोलर पार्क का शुभारंभ ऐतिहासिक अवसर है। इससे देश में सबसे सस्ती दर पर बिजली उपलब्ध होगी। नीमच की धरती ने प्रदेश को दो मुख्यमंत्री दिए। नीमच ने अफीम उत्पादन और नेत्रदान अभियान में शीर्ष स्थान हासिल कर अपनी अलग पहचान बनाई है। मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को संत कबीर जयंती की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सनातन संस्कृति में सूर्य देवता ऊर्जा के स्रोत हैं।

अवैध प्रवासन, मानव तस्करी और फर्जी एजेंटों के खिलाफ डॉ. एस. जयशंकर ने दिखाया कड़ा रुख, दुनिया को चेताया

नई दिल्ली। नई दिल्ली में आयोजित मानव संसाधन गतिशीलता मंच को संबोधित करते हुए विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने कहा कि आज दुनिया तेजी से बदल रही है और इस बदलती व्यवस्था में कौशल आधारित मानव संसाधन की वैश्विक मांग लगातार बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि जनसांख्यिकीय बदलाव, तकनीकी नवाचार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वचालन, डिजिटलीकरण और हरित अर्थव्यवस्था जैसी नई प्रवृत्तियां वैश्विक श्रम बाजार को नया स्वरूप दे रही हैं। इसके साथ ही स्वास्थ्य, विनिर्माण, निर्माण और कृषि जैसे पारंपरिक क्षेत्रों में भी कुशल मानव संसाधन की आवश्यकता बनी हुई है। ऐसे समय में देशों के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वह रचनात्मक सोच और सहयोग के माध्यम से भविष्य की समृद्धि सुनिश्चित करें।

विदेश मंत्री ने कहा कि लंबे समय तक वैश्विक आर्थिक चर्चाएं व्यापार, निवेश और पूंजी के प्रवाह तक सीमित रही थीं, लेकिन अब मानव संसाधन आर्थिक विकास का सबसे महत्वपूर्ण आधार बनकर उभरा है। दुनिया के अनेक देश यह समझने लगे हैं कि सतत विकास, नवाचार और उत्पादकता बनाए रखने के लिए कुशल और अनुकूलनशील प्रतिभा तक पहुंच अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि मानव



संसाधन गतिशीलता केवल लोगों के एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने का विषय नहीं है, बल्कि यह आकांक्षाओं को अवसरों से जोड़ने, प्रतिभा को मांग से मिलाने और आर्थिक प्रगति के नए रास्ते तैयार करने की प्रक्रिया है। इसके माध्यम से आर्थिक विकास के साथ सामाजिक कल्याण को भी मजबूती मिलती है। डॉ. जयशंकर ने कहा कि भारत की दृष्टि केवल विदेशों में रोजगार उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं है, बल्कि भारत मानव संसाधन गतिशीलता को अंतरराष्ट्रीय सहयोग का एक महत्वपूर्ण स्तंभ मानता है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की साझेदारियां पारस्परिक लाभ, साझा जिम्मेदारी और दीर्घकालिक स्थिरता पर आधारित होती हैं। यदि इन्हें प्रभावी ढंग से संचालित किया जाए तो इससे स्रोत देशों, गंतव्य देशों, नियोक्ताओं, श्रमिकों और समाज सभी को लाभ मिलता है। उन्होंने कहा कि सुरक्षित, व्यवस्थित और कानूनी प्रवासन सुनिश्चित करने के लिए द्विपक्षीय सहयोग अत्यंत आवश्यक है।

विशेष



इस्लाम के शहीद-ए-आज़म इमाम हुसैन (रज़ि.) – कर्बला की दास्तान, पूरी इंसानियत के लिए पैग़ाम

कर्बला का वाक़िआ केवल एक तारीखी घटना नहीं, बल्कि इंसानियत के ज़मीर को झकझोर देने वाला ऐसा पैग़ाम है जो हर दौर, हर क़ौम और हर इंसान के लिए रहनुमाई का ज़रिया है। इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने यह साबित कर दिया कि ताक़त तलवार से नहीं, बल्कि सच्चाई, ईमान और सब्र से पैदा होती है। उन्होंने सत्ता, दौलत और दुनिया की आरामतलबी के लिए अपने उसूलों का सौदा नहीं किया। उन्होंने अपने नाना, हज़रत मुहम्मद (?) के दीन और इंसान की हिफ़ाज़त के लिए अपने घराने तक की कुर्बानी पेश कर दी। यही वजह है कि आज 1400 साल बाद भी उनका नाम इज़्जत और मोहब्बत से लिया जाता है।

आज की नस्ल के लिए कर्बला का पैग़ाम

अगर नौजवान इमाम हुसैन (रज़ि.) की ज़िंदगी से सीख लें, तो समाज की बहुत-सी बुराइयाँ ख़त्म हो सकती हैं।

- झूठ की जगह हमेशा सच्चाई को अपनाएँ।
- रिश्तत, बेईमानी और जुल्म से दूर रहें।
- माता-पिता की ख़दिमत करें।
- इल्म हासिल करें और समाज की भलाई में उसका इस्तेमाल करें।
- कमज़ोर और मज़लूम का साथ दें।
- नफ़रत नहीं, मोहब्बत और भाईचारे को बढ़ावा दें।
- गुस्से की जगह सब्र और हिकमत से काम लें।

कर्बला हमें क्या सिखाती है?

कर्बला सिखाती है कि अगर पूरी दुनिया एक तरफ़ हो और हक़ दूसरी तरफ़, तब भी हक़ का साथ नहीं छोड़ना चाहिए।

कर्बला सिखाती है कि इंसान की असली पहचान उसका किरदार है, न कि उसका ओहदा या दौलत।

कर्बला सिखाती है कि जो इंसान दूसरों के लिए जीता है, वही मरने के बाद भी लोगों के दिलों में ज़िंदा रहता है।

समाज के लिए संदेश

आज हमें यह सोचने की ज़रूरत है कि क्या हम अपने घर, मोहल्ले और समाज में इंसान, ईमानदारी और इंसानियत को बढ़ावा दे रहे हैं?

अगर हम झूठ बोलते हैं, धोखा देते हैं, नफ़रत फैलाते हैं या किसी मज़लूम का हक़ मारते हैं, तो हमें कर्बला से फिर सीखने की ज़रूरत है।

इमाम हुसैन (रज़ि.) ने हमें सिखाया कि जुल्म करना भी गुनाह है और जुल्म पर खामोश रहना भी गुनाह है। इसलिए हर इंसान को अपनी आवाज़ हक़ और इंसान के लिए उठानी चाहिए, मगर अमन, अदब और हिकमत के साथ।

युवा पीढ़ी के नाम पैग़ाम: मोबाइल और सोशल मीडिया के इस दौर में अपने वक़्त को फ़िज़ूल चीज़ों में बर्बाद करने के बजाय इल्म, अच्छे अख़लाक़, दीन और इंसानियत की ख़दिमत में लगाएँ। यही इमाम हुसैन (रज़ि.) की तालीमात का असली मक़सद है।

याद रखिए, तलवार जिस्म को क़त्ल कर सकती है, लेकिन सच्चाई और किरदार को कभी नहीं। कर्बला की सबसे बड़ी सीख यह है कि हक़ के रास्ते पर चलने वाला इंसान कभी हारता नहीं, चाहे वह दुनिया की नज़र में शहीद ही क्यों न हो जाए।

आइए, इस मुहर्रम हम यह अहद करें कि हम झूठ की जगह सच्चाई, नफ़रत की जगह मोहब्बत, जुल्म की जगह इंसान और स्वार्थ की जगह इंसानियत को अपनाएँगे। यही इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) को सच्ची ख़राज-ए-अक़ीदत होगी।

कर्बला रोने का नाम नहीं, बल्कि अपने किरदार को बदलने का नाम है।

हर दौर का यज़ीद बदलता रहता है, लेकिन हर दौर में हुसैनियत सच्चाई, इंसान और इंसानियत की आवाज़ बनकर ज़िंदा रहती है।

कर्बला की दास्तान हमें ये तालीम नहीं देती कि शहादत को तमाशा या दिखावे का ज़रिया बना लिया जाए। इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) की अज़ीम कुर्बानी हक़, सब्र, अद्ल और दीन-ए-इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिए थी।

मुहर्रम के अय्याम में मुख़्तलिफ़ मुक़ामात पर मजलिसें, जुलूस और कुछ जगहों पर मेले भी लगते हैं। मगर हर मुसलमान को चाहिए कि वह अपना जायज़ा ले कि क्या उसका अमल कर्बला के पैग़ाम के मुताबिक़ है या नहीं।

मर्द हों या औरतें, सब पर लाज़िम है कि हया, पर्दा, शराफ़त और अख़लाक़ का दामन मज़बूती से थामे रखें। शहीद-ए-कर्बला की याद हमें अपनी ज़िंदगी सुधारने, जुल्म के मुक़ाबले में हक़ पर कायम रहने, और मोहब्बत, अमन व इंसानियत को फ़रोज़ देने की दावत देती है।

जो अपने घर के गुम को तमाशा नहीं बनाता, वह कर्बला की शहादत को भी तमाशा नहीं बनाएगा। इमाम हुसैन (रज़ि.) की कुर्बानी हमें सब्र, इंसान और इंसानियत की तालीम देती है, सोचिए! अगर आपके अपने अज़ीज़ का इतिहास हो जाए, तो क्या आप उसे ज़हन में बदल देंगे? फिर शहीद-ए-कर्बला की याद का मक़सद क्या होना चाहिए-तमाशा या इबरत? कर्बला की मिट्टी शहीदों के खून से महकी है। उसका एहताराम हमारे किरदार, अख़लाक़ और हक़ पर डटे रहने में है, न कि दिखावे में, शहादत का मतलब शोर नहीं, बल्कि ज़मीर की आवाज़ है। कर्बला हमें अपने दिल और किरदार को बदलने का पैग़ाम देती है, इमाम हुसैन (रज़ि.) ने हमें रोने से पहले सोचने, और सोचने के बाद हक़ पर डट जाने की तालीम दी है।

और इसके अलावा भी तुमको समझ नहीं आता है कि तो तेरी हर दलील मेरे जूते की नोक पर, कर्बला के शहीदों की शहादत पर ढोल बजाने वालों मैंने देखा है कि मोहर्रम के दसवें दिन मेलो और बाज़ारों में क्या इबादतें होती हैं, हम समझ कर भी ना समझ बनते हैं फिर कहते हैं ठलबूक या हुसैनठ हमने अपने दीन का मज़ाक बना रहा है। हमें अपने अंदर झांक कर देखना चाहिए, अल्लाह हम सबको हिदायतें अदा फरमाए अमीन सुम्मा अमीन

मुहम्मद शारिब खान (हाई कोर्ट एडवोकेट/यूट्यूबर)

आपातकाल के स्याह दिन बनाम आज के अच्छे दिन

हर साल आपातकाल की सालगिरह पर चूँकि उन 'काले दिनों' पर हाय-हाय करने का दस्तूर है, इसलिए इस बार जब 51 साल पूरे हो गए हैं, मैं भी आप से कुछ गुज़ारिश करना चाहता हूँ, इसलिए कि इन पाँच दशकों में यह धारणा बनाने में कोई कसर बाकी नहीं रखी गई है कि जनतंत्र से इंदिरा गांधी का कोई लेना-देना था ही नहीं।

1975 के बाद जन्म लेने वाली पीढ़ी को तो यह सिखाने में कोई कसर छोड़ी ही नहीं गई है कि इंदिरा लोकतंत्र-विरोधी थीं और एक तरह से तानाशाह ही थीं। हम अपने बच्चों को लगातार यह बता रहे हैं कि इंदिरा ने जनता के मौलिक अधिकार निलंबित कर दिए थे, विपक्ष के सभी बड़े नेताओं को जेल भेज दिया था और उन 'काले दिनों' में जैसी ज़्यादातियाँ हुईं, कभी नहीं हुईं।

इंदिरा ने आपातकाल क्यों लगाया था, इस पर लंबी चर्चा हो सकती है। उन्होंने विपक्षी नेताओं को क्यों जेल भेजा था, इस पर भी काफी बहस की गुंजाइश है। और, आपातकाल में सचमुच कितनी ज़्यादाती हुई या नहीं हुई और की तो किसने की, किसके इशारे पर की, इस पर तो पूरा ग्रंथ लिखा जा सकता है। लेकिन चूँकि ऐसा करने में अलोकप्रिय होने की पूरा जोखिम मौजूद है, इसलिए आज तक यह काम किसी ने नहीं किया।

मैं भी मानता हूँ कि इंदिरा ने आपातकाल लगाकर के अपने जीवन की सबसे बड़ी ग़लती की थी। लेकिन यह भी तो एक तथ्य है कि उन्होंने अपनी ग़लती मान ली थी। खुद इसके लिए माफ़ी मांगी थी।

उनके बाद राजीव गांधी ने भी इसके लिए माफ़ी मांगी। सोनिया गांधी की कांग्रेस भी आपातकाल की भूल स्वीकार कर चुकी है। आज के दौर में जब अपनी ग़लती मानने के बजाय अरने का रिवाज़ है, आपको नहीं लगता कि इंदिरा और कुछ भी थीं, तानाशाह नहीं थीं?

25 जून 1975 की आधी रात आपातकाल लगा था। 21 मार्च 1977 को इंदिरा ने आपातकाल हटाने का ऐलान कर दिया था। मैं नहीं कहता कि इंदिरा के इन 633 दिनों को कोई भूले। जिन्हें याद रखना है, वे ज़रूर याद रखें, लेकिन इतना निवेदन मैं ज़रूर करना चाहता हूँ कि सिर्फ़ इन 633 दिनों के आधार पर इंदिरा के ज़िंदगी के पूरे 67 वर्षों पर अपनी पसंद का रंग पोत देना ठीक नहीं है।

मुझे तो लगता है कि जितना गहरा जनतांत्रिक दायित्वबोध इंदिरा में था, बहुत कम राजनीतिकों में होता है। भले ही इंदिरा के दामन पर आपातकाल लगाने के दाग़ हैं, लेकिन उनके जैसा जनतांत्रिक होने के लिए भी कई जन्म के पुण्य लगते हैं।

एक लड़की, जिसके पिता स्वाधीनता आंदोलन की मसरूफ़ियत के चलते कभी-कभार ही घर रह पाते हों; एक लड़की, जिसके बचपन का ज़्यादातर हिस्सा इसलिए अकेलेपन में गुज़रा हो कि पिता कुल मिलाकर 11 साल अंग्रेज़ों की जेलों में रहे; एक लड़की, जिसका पूरा बचपन अपनी बीमार माँ की देखभाल और फिर उसे खो देने की निजी त्रासदी के बीच गुज़रा हो; एक लड़की, जो खुद अपनी नरम सेहत से परेशान रहते हुए भी आज़ादी की लड़ाई में अपनी भूमिका अदा करती रही हो; वह लड़की, जब अपने देश की प्रधानमंत्री हो जाए तो मैं नहीं मानता कि इतनी संवेदनशून्य हो सकती है कि तानाशाह बनने का सोच ले।

इंदिरा की परवरिश तरह-तरह के अभावों में हुई थी। अगर मैं कहूँगा कि इनमें आर्थिक अभाव भी शामिल था तो आपको ताज्जुब हो सकता है।

लेकिन सच्चाई यह भी है कि इंदिरा की माँ का इलाज़ कराने तक के पैसे उनके पिता जवाहरलाल नेहरू के पास एक वक़्त पैसे नहीं थे।

नेहरू की शादी कमला से 8 फरवरी 1916 को हुई थी। उस दिन वसंत पंचमी थी। कमला के पिता का नाम था अटल कौल। कमला 16 साल की थीं। शादी के समय नेहरू 27 साल के थे। इंदिरा को जन्म देने के बाद से ही कमला नेहरू बीमार रहने लगी थीं।

इंदिरा के जन्म के 7 साल बाद 1924 में उन्होंने एक बेटे को भी जन्म दिया था। वह कुछ ही दिन जीवित रहा। नेहरू तब जेल में थे। 7 साल की इंदिरा गांधी पर अपने छोटे भाई की मौत के हादसे ने असर नहीं डाला होगा?

कमला को टीबी हो गई थी। वे महीनों लखनऊ के अस्पताल में भर्ती रहीं। इंदिरा इलाहाबाद से लखनऊ के बीच आती-जाती रहती थीं। डॉक्टरों ने उन्हें इलाज़ के लिए स्विट्ज़रलैंड ले जाने की सलाह दी। यह 1926 की बात है। जवाहरलाल के पास इतने पैसे नहीं थे कि यह खर्च उठा पाते। शादीशुदा थे। बेटा भी हो गई थी। इसलिए उन्हें अपने पिता मोतीलाल जी से खर्च के लिए पैसे लेना अच्छा नहीं लगता था।

मोतीलाल जी को कहां कोई कमी थी? लेकिन जवाहरलाल के पास खुद के पैसे नहीं थे। उन्होंने नौकरी तलाशनी शुरू की। पिता को पता चला तो वे बहुत नाराज़ हुए। उनका मानना था कि भारत में राजनीतिक काम करने वाले को संन्यासी की तरह रहना होता है। वह आजीविका कमाने के लिए नौकरी-धंधा नहीं कर सकता। वरना लोग उसे नेता नहीं मानेंगे।

मोतीलाल ने जवाहरलाल से कहा कि जितना तुम एक साल में कमाओगे, उतनी तो मेरी एक हफ़्ते की कमाई है। लेकिन बेटे की खुदगरी का मान रखने के लिए मोतीलाल ने जवाहरलाल को अपने कुछ मुकदमों की याचिकाएँ तैयार करने का काम दिया और बदले में दस हज़ार रुपये का मेहनताना दिया। तब नेहरू अपनी पत्नी को लेकर मार्च के महीने में इलाज़ के लिए परदेस गए।

स्वाधीनता आंदोलन के दिनों में इंदिरा को अपने पिता से जो संस्कार मिले थे, वे उन्हें ज़िंदगी भर अपने पल्लू से बांधे रहीं। लोकतंत्र में नेहरू की गहरी आस्था थी। इंदिरा के संस्कार भी स्वाधीनता आंदोलन की आंच में न पगे होते तो बात अलग होती। यही कारण है कि हमने देखा कि अगर संजय गांधी की माँ ने भारत को आपातकाल के हवाले कर दिया था, तो नेहरू की बेटा ने भारत को आपातकाल की अंधेरी कोठरी से मुक्त कर फिर लोकतंत्र की बगिया में खेलने भेज दिया।

कितने लोग हैं, जो अपनी भूल-सुधार का माद्दा रखते हैं? कितने लोग हैं, जो ऐसा प्रायश्चित्त कर सकते हैं? जनतंत्र के प्रति यह दायित्वबोध ही इंदिरा को दूसरों से अलग बनाता है।

हमने पढ़ा है कि इंदिरा गांधी को आपातकाल लगाने की सलाह देने वालों में सिद्धार्थ शंकर राय प्रमुख थे। लेकिन 25 जून की आधी रात आपातकाल लगने के वक़्त का एक वाक़या और है।

राजेंद्र कुमार धवन राष्ट्रपति फ़ख़रुद्दीन अली अहमद से अध्यादेश पर दस्तख़त करा लाए थे। इंदिरा 26 जून की सुबह देश को संबोधित करने के लिए अपना भाषण तैयार कर रही थीं। देवकांत बरुआ और राय इसमें उनकी मदद कर रहे थे। गृह मंत्री तो ब्रह्मानंद रेड्डी थे, लेकिन गृह राज्य मंत्री ओम मेहता संजय गांधी के चहेते थे। दिल्ली के उपराज्यपाल किशनचंद और ओम मेहता संजय के ताबेदार थे।

(शेष पेज 6 पर)

मेव ट्रस्ट ने किया सभी समाज के 350 से अधिक मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान



वरिष्ठ अभिभाषक अनिल त्रिवेदी को 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड', शिक्षा के जरिए समाज को सशक्त बनाने का संकल्प

इंदौर। मेव एजुकेशनल वेलफेयर अवेयरनेस ट्रस्ट, इंदौर द्वारा आज अहिल्या माता कॉलोनी (रानी सती गेट) स्थित चरक हॉस्पिटल कैम्पस के संतोष ऑडिटोरियम (फिल्म भवन) में मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह 2026 का भव्य आयोजन किया गया। इस गरिमामयी समारोह में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले होनहार छात्र-छात्राओं को सम्मानित कर उनका उत्साहवर्धन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व विधायक श्री सत्यनारायण पटेल एवं आईईएस अधिकारी शोएब अख्तर मेव उपस्थित रहे। वहीं विशिष्ट अतिथियों में सी.ए. मुख्तियार साहब एवं उनकी टीम, प्रोफेसर डॉ. असद खान, सय्यद आसिफ अली वारसी, सिने-तारिका सारिका दीक्षित, लायंस क्लब के पूर्व अध्यक्ष दिनेश रामदार, एडवोकेट रमजान (शं ऐक्टिविटी संस्था) और सूरज कानोडिया (अनहद संस्था) ने शिरकत की।

समारोह के दौरान कक्षा 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं में 75% या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले 350 से अधिक मेधावी विद्यार्थियों को मोमेंटो, प्रशस्ति पत्र और स्मारिका भेंट कर नवाजा गया। इस अवसर पर ट्रस्ट के अध्यक्ष हाजी शम्सुद्दीन चिश्ती ने बताया कि समारोह में प्रदेश और शहर की अनेक गणमान्य हस्तियों, प्रशासनिक अधिकारियों और शिक्षाविदों की गौरवमयी उपस्थिति रही। ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना और प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रेरित करना है। इसी कड़ी में समाज में उत्कृष्ट योगदान और सेवा कार्यों के लिए वरिष्ठ अभिभाषक श्री अनिल त्रिवेदी जी को 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड' से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अतिथियों ने कहा कि आज की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही कल के सुनहरे

और उज्ज्वल भविष्य की नींव है। उन्होंने विद्यार्थियों को सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ निरंतर कड़ी मेहनत करने और देश व समाज का नाम रोशन करने के लिए प्रेरित किया। इस ऐतिहासिक मौके पर इंदौर मेव समाज के प्रमुख जनों में पूर्व डीएसपी सिराज मेव, आसिफ मेव, आदिल मेव, अब्दुल गफूर, याकुब मेमन, सूरज कानोडिया, मुश्ताक खान, सादिक चंदेली बड़वानी, एडमिन मसीह, जफर बबलू, हाजी ज़मीर, अमजद मेव, इकबाल मेव, जहूर मेव, एजाज मेव, फिरोज मेव, शेख शाकिर, सबदर ठेकेदार, डॉ. फारूक, तालिब हुसैन और राजा चिश्ती विशेष रूप से मौजूद रहे। कार्यक्रम का सफल व मंच-मनोहारी संचालन अब्दुल हफीज बनारसी और एडवोकेट शरीब खान द्वारा किया गया। समारोह के समापन पर मोहम्मद अय्यूब खान एवं मेव ट्रस्ट की ओर से सभी अतिथियों, सहयोगकर्ताओं और उपस्थित अभिभावकों का सहृदय आभार व्यक्त किया गया।



अनिल त्रिवेदी जी ने कहा- पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में जीवन देकर ईश्वर ने हमें एक दूसरे से संपर्क कर, मोहब्बत का पेगाम बाँटने की सीख दी है, यहाँ अनेक जीव जन्तु हैं, लेकिन मनुष्य में अच्छा बुरा सोचने की बुद्धि ईश्वर ने दी है कि वह आपस में एक दूसरे से भाईचारे के साथ रहे। आज के हालात किसी से छिपे नहीं। मेव ट्रस्ट ने जो बीड़ा समाज को शिक्षा के क्षेत्र में जागरूक करने का उठाया, मैं उनकी पीठ थपथपाता हूँ। मेवात, दिल्ली, अलवर में निवासरत मेवों को पिछले पच्चास साठ सालों से जानता हूँ, यह लोग ईमानदार, बहादुर, देशभक्त हैं। हमें मोहल्लों में सहकारिता समिति बना, युवा, बुजुर्गों, अशिक्षित लोगों को रोजाना एक घंटा निशुल्क शिक्षा देना चाहिए, इसमें डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, अधिकारी अपना योगदान दे तो समाज में परिवर्तन आएगा।

सत्यनारायण पटेल ने कहा- आज मेव ट्रस्ट के मेधावी छात्र सम्मान समारोह में आकर मुझे खुशी हो रही है, यहाँ सभी हिंदू, मुस्लिम, ईसाई समाज के बच्चों ने उपस्थिति दर्ज की है जो सद्भावना का प्रतीक है। हमारे बुजुर्गों ने कहा है कि शिक्षा वह दान है, जिसे कोई चुरा नहीं सकता। मेव ट्रस्ट ने जो बीड़ा शिक्षा को लेकर उठाया वे मुबारक बाद के पात्र हैं।

सीए मुख्तियार- मुझे मालवा की धरती और पुरे भारत के सबसे स्वच्छ शहर इंदौर में आकर बेहद खुशी हो रही है, मौका भी मेधावी छात्रों के सम्मान का है, जिसमें सभी समाजों के बच्चों ने अपनी योग्यता को निखारा है, मौजूद अभिभावकों में महिलाओं की मौजूदगी देख प्रेरणा मिली है, आपके बच्चे, परिवार, राष्ट्र का नाम रोशन करेंगे। मैं आपके बच्चों से भी कमजोर छात्र रहा हूँ, मुझे 12वीं में 54 प्रतिशत अंक ही मिले, मैंने हिम्मत नहीं हारी, लगन से आगे बढ़ाई कर सीए बना। हमारे इस्लाम के शुरू में ही, पैगंबर को संदेश दिया है कि पढ़ो..... लड़का, लड़की में भेद नहीं शिक्षा के लिए चीन भी जाना पड़े तो जाओ। लेकिन हम इसे भूल गये, और दुनियादारी में उलझ कर, आज परेशान हैं। मेव ट्रस्ट ने इस और ध्यान देकर समाज में जागरूकता का कार्य किया, हम भी मेवात में ऐसे ही कार्य करेंगे।

मदीना मुनव्वरा में रौज़ा-ए-रसूल के अंदर नबी करीम की क़ब्र-ए-मुबारक के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी

साढ़े पाँच सदियों में कोई भी आपका? की क़ब्र-ए-अनवर तक नहीं पहुँच सका...

आप का ज़ाहिरी विसाल उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के हुजरा-ए-मुबारक में हुआ था और वहीं आपकी तदफ़ीन की गई। इसके बाद हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की भी वहीं तदफ़ीन हुई। इस प्रकार रौज़ा शरीफ़ के अंदर इस समय तीन आरामगाहें हैं।

आप? की क़ब्र-ए-मुबारक की कोई तस्वीर दुनिया में मौजूद नहीं है, क्योंकि पिछले साढ़े पाँच सौ वर्षों में कोई भी व्यक्ति आपकी? की क़ब्र-ए-मुबारक तक नहीं पहुँच सका है।

वह हुजरा शरीफ़, जिसमें आप? और आपके दो साथियों की क़ब्रें हैं, उसके चारों ओर एक चारदीवारी है। उस चारदीवारी से सटी हुई एक और दीवार है, जो पाँच दीवारों पर आधारित है। यह पाँच कोनों वाली दीवार हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैह ने बनवाई थी। इसके पाँच कोने रखने का उद्देश्य इसे खाना-ए-काबा की समानता से बचाना था।

इस पाँच कोनों वाली दीवार के चारों ओर एक और पाँच दीवारों वाली फसील (धराबंदी) है। इस पाँच कोनों वाली फसील पर एक बड़ा पर्दा या गिलाफ़ डाला गया है।

ये सभी दीवारें बिना किसी दरवाज़े के हैं, इसलिए किसी व्यक्ति के लिए इन दीवारों के भीतर प्रवेश करने की कोई संभावना नहीं है।

रौज़ा-ए-रसूल? की अंदर से ज़ियारत करने वाले लोग भी इस पाँच कोनों वाली दीवार पर लटके हुए पर्दे तक ही पहुँच पाते हैं।

रौज़ा-ए-रसूल? पर सलाम पेश करने वाले आम ज़ायरीन जब सुनहरी जालियों के सामने खड़े होते हैं, तो जालियों के छेदों से उन्हें केवल वही पर्दा दिखाई देता है, जो हुजरा शरीफ़ की पाँच कोनों वाली दीवार पर पड़ा हुआ है।

इस प्रकार सलाम पेश करने वाले ज़ायरीन और रसूलुल्लाह? की क़ब्र-ए-अतहर के बीच यद्यपि केवल कुछ गज़ का फ़ासला होता है, लेकिन उनके बीच कुल चार दीवारें होती हैं-पहली सुनहरी जालियों वाली दीवार, दूसरी पाँच कोनों वाली दीवार, तीसरी एक और पाँच कोनों वाली दीवार और चौथी वह चारदीवारी, जो मूल हुजरे की दीवार थी।

पिछले तेरह सौ वर्षों में इस पाँच कोनों वाले हुजरे के भीतर कोई भी प्रवेश नहीं कर सका, सिवाय दो अवसरों के। एक बार 91 हिजरी में हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैह के दौर में उनका एक गुलाम अंदर गया और दूसरी बार 881 हिजरी में, प्रसिद्ध इतिहासकार अल्लामा समहूदी के कथन के अनुसार, स्वयं वे अंदर गए।

मस्जिद-ए-नबवी में किब्ले की दिशा दक्षिण की ओर है। नबी पाक का रौज़ा-ए-मुबारक एक बड़े हॉलनुमा कमरे में स्थित है। उस बड़े हॉल में प्रवेश करने का दरवाज़ा

पूर्व दिशा में है, अर्थात् जन्नतुल बक़ी की ओर। यह दरवाज़ा केवल विशेष व्यक्तियों के लिए खोला जाता है। इस दरवाज़े से अंदर प्रवेश करने पर बाईं ओर हज़रत फ़ातिमा ज़ह्रा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की मेहराब है। इसके पीछे उनकी चारपाई (सरीर) है।

अल-अरबिया वेबसाइट ने शोधकर्ता मुहियुद्दीन अल-हाशिमि के हवाले से बताया है कि हॉलनुमा कमरे में रौज़ा-ए-मुबारक की ओर बढ़ने पर हरे गिलाफ़ से ढकी हुई एक दीवार दिखाई देती है। 1406 हिजरी में शाह फ़हद के दौर में इस गिलाफ़ को बदला गया था। इससे पहले लगाया गया पर्दा 1370 हिजरी में शाह अब्दुल अज़ीज़ आल सऊद के समय तैयार किया गया था।

उक्त दीवार 881 हिजरी में उस दीवार के चारों ओर बनाई गई थी, जिसे 91 हिजरी में हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैह ने बनवाया था। इस बंद दीवार में कोई दरवाज़ा नहीं है। किब्ले की दिशा में इसकी लंबाई 8 मीटर, पूर्व और पश्चिम दिशा में 6.5 मीटर तथा उत्तर दिशा की दोनों दीवारों की कुल लंबाई 14 मीटर है।

कहा जाता है कि 91 हिजरी से लेकर 881 हिजरी तक लगभग आठ सदियों तक कोई भी व्यक्ति नबी करीम? की क़ब्र-ए-मुबारक को नहीं देख सका। इसके बाद 881 हिजरी में हुजरा-ए-मुबारक की दीवारें कमज़ोर हो जाने के कारण उनका पुनर्निर्माण करना पड़ा।

उस समय प्रसिद्ध इतिहासकार और फ़कीह अल्लामा नूरुद्दीन अबुल हसन समहूदी मदीना मुनव्वरा में मौजूद थे, जिन्हें इन दीवारों के पुनर्निर्माण के कार्य में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे लिखते हैं कि 14 शाबान 881 हिजरी को पाँच कोनों वाली दीवार को पूरी तरह गिरा दिया गया। देखा गया कि अंदर की चारदीवारी

में भी दरारें पड़ चुकी थीं, इसलिए उसे भी गिरा दिया गया।

अब हमारी आँखों के सामने पवित्र हुजरा था। मुझे अंदर प्रवेश करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं उत्तर दिशा की ओर से अंदर गया। वहाँ से ऐसी खुशबू की लहर आई, जैसी मैंने अपने जीवन में कभी महसूस नहीं की थी। मैंने रसूलुल्लाह? तथा आपके दोनों खुलफ़ा की खदिमत में पूरे अदब के साथ सलाम पेश किया।

पवित्र हुजरा चौकोर आकार का था। उसकी चारदीवारी काले रंग के पत्थरों से बनी हुई थी, जैसे पत्थर खाना-ए-काबा की दीवारों में उपयोग किए गए हैं। उस चारदीवारी में कोई दरवाज़ा नहीं था। मेरा पूरा ध्यान तीनों क़ब्रों पर केंद्रित था। तीनों क़ब्रें लगभग ज़मीन की सतह के बराबर थीं। केवल एक स्थान पर थोड़ा-सा उभार था। संभवतः वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र थी। क़ब्रों पर साधारण मिट्टी पड़ी हुई थी। इस घटना को भी पाँच सदियों बीत चुकी हैं, जिनके दौरान कोई भी व्यक्ति उन सीलबंद और मज़बूत दीवारों के भीतर प्रवेश नहीं कर सका।

अल्लामा समहूदी ने अपनी पुस्तक में हुजरा-ए-नबवी का उल्लेख करते हुए लिखा है कि उसका फ़र्श लाल रंग की रेत पर आधारित है। हुजरा-ए-नबवी का फ़र्श मस्जिद-ए-नबवी के फ़र्श से लगभग 60 सेंटीमीटर नीचे है। इस दौरान हुजरे पर मौजूद पुरानी छत को हटाकर उसकी जगह सागौन (टीक) की लकड़ी की छत लगाई गई, जो देखने में हुजरे पर लगी चौकोर जालियों जैसी प्रतीत होती है। इस लकड़ी की छत के ऊपर एक छोटा-सा गुंबद बनाया गया, जिसकी ऊँचाई 8 मीटर है और यह गुंबद-ए-खज़रा के ठीक नीचे स्थित है।

ये सभी जानकारी प्रसिद्ध पुस्तक ठवफ़ा-उल-वफ़ा बि अखबार दार-उल-मुस्तफ़ा? के लेखक अल्लामा समहूदी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में दर्ज की है। मस्जिद-ए-नबवी, हुजरा-ए-शरीफ़ और क़ब्र-ए-मुबारक के संबंध में यह पुस्तक सबसे प्रामाणिक संदर्भ मानी जाती है। इस पुस्तक में मदीना मुनव्वरा के इतिहास से संबंधित सभी जानकारीयों संकलित की गई हैं।

अल्लामा समहूदी का निधन 911 हिजरी में हुआ। 881 हिजरी (1477 ईस्वी) से लेकर आज तक लगभग साढ़े पाँच सौ वर्षों के दौरान कोई भी व्यक्ति रसूलुल्लाह? की क़ब्र-ए-मुबारक की प्रत्यक्ष ज़ियारत नहीं कर सका है। (साभार)

क़र्बला और हुसैन क्या हैं और क्यों ज़रूरी हैं

मुहर्रम कोई उत्सव नहीं है, यह इंसानियत की पेशानी पर रखा हुआ वह टंडा हाथ है, जो हमें हमारी ही आग से बचाना चाहता है, यह महीना कैलेंडर में नहीं आता, यह आत्मा में उतरता है, यह बताता है कि इतिहास सिर्फ़ तारीखों से नहीं बनता, कुछ इतिहास प्यास से बनते हैं, कुछ सन्नाटे से, कुछ उस गर्दन से जो कट तो जाती है मगर झुकती नहीं, क़र्बला को सिर्फ़ एक मैदान समझना, क़र्बला के साथ बेईमानी है, क़र्बला दरअसल मनुष्य की परीक्षा थी, एक तरफ़ सत्ता थी, सेना थी, संख्या थी, आदेश था, डर था, लालच था, दूसरी तरफ़ कुछ लोग थे जिनके पास पानी कम था, साधन कम थे, रास्ते बंद थे, मगर आत्मा पूरी थी, और इतिहास ने वही दर्ज किया जो आत्मा ने कहा, क्योंकि तलवारें शरीर काट सकती हैं, किरदार नहीं, हुसैन की सबसे बड़ी बात यह नहीं कि उन्होंने मौत का सामना किया, बहुत लोग मौत का सामना करते हैं, हुसैन की सबसे बड़ी बात यह थी कि उन्होंने उस जीवन को टुकरा दिया जिसमें सिर बच जाता मगर सच मर जाता, उन्होंने बता दिया कि हर सांस जिंदगी नहीं होती, कुछ सांसों सिर्फ़ समझौते की किश्तें होती हैं, और कुछ मौतों ऐसी होती हैं जो आने वाली नस्लों की रगों में हिम्मत बनकर दौड़ती हैं, क़र्बला में प्यास सिर्फ़ पानी की नहीं थी, प्यास न्याय की थी, प्यास सम्मान की थी, प्यास इस बात की थी कि इंसान को इंसान रहने दिया जाए, कि सत्ता अगर अन्याय पर उतर आए तो आदमी कम से कम इतना तो करे कि अपनी रीढ़ की हड्डी को पहचान ले, हुसैन ने कोई साम्राज्य नहीं जीता, कोई तख़्त नहीं लिया, कोई राज नहीं बसाया, फिर भी सदियों उनके नाम के आगे अदब से खड़ी हैं, क्योंकि दुनिया आखिरकार उसी को याद रखती है जो सुविधा के आगे नहीं, सत्य के आगे सिर झुकाता है, मुहर्रम हमें सिर्फ़ मातम करना नहीं सिखाता, यह हमें मातम की वजह समझाता है, आँसू अगर सिर्फ़ आँख से गिरें तो पानी हैं, लेकिन आँसू अगर अन्याय की स्मृति में गिरें तो वह गवाही बन जाते हैं, सीना अगर सिर्फ़ दुख में पीटा जाए तो दर्द है, लेकिन सीना अगर उसूल की याद में पीटा जाए तो वह घोषणा है कि हमने अभी

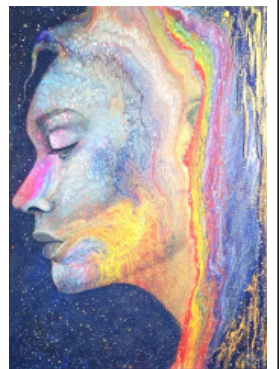
तक अपनी रूह को पूरी तरह बेचा नहीं है,

हुसैन इसलिए अमर नहीं हैं कि उनके साथ जुल्म हुआ, दुनिया में जुल्म बहुतों पर हुआ है, हुसैन इसलिए अमर हैं कि जुल्म के सामने उन्होंने अपने चरित्र को छोटा नहीं होने दिया, उन्होंने यह नहीं कहा कि हालात ऐसे हैं इसलिए झुकना पड़ेगा, उन्होंने यह नहीं कहा कि बच्चे हैं, परिवार है, काफ़िला है, थोड़ा समझौता कर लेते हैं, उन्होंने दुनिया को बताया कि कुछ जगहों पर हार जाना भी जीत से ऊँचा होता है, क्योंकि जीत अगर यज़ीद की तरह मिले तो वह ताज़ नहीं, माथे पर कलंक होती है, और सच कहिए तो क़र्बला हर साल बाहर नहीं आती, क़र्बला रोज़ हमारे भीतर उठती है, जब हम सच जानते हुए चुप रह जाते हैं, जब हम ताकतवर की मेहरबानी के लिए कमज़ोर का दर्द अनदेखा कर देते हैं, जब हम सुविधा की थाली में आत्मा का हिस्सा परोस देते हैं, जब हम अन्याय को देखकर कहते हैं कि हमें क्या, वहीं कहीं हमारे भीतर का फुरात दूर होने लगता है, वहीं कहीं रेत तपने लगती है, वहीं कहीं इतिहास हमें खामोशी से देखता है, मुहर्रम हमें हुसैन को याद करने से पहले खुद को देखने को कहता है, कि हमारे भीतर कितना हुसैन बचा है और कितना यज़ीद पल रहा है, हम किसके साथ खड़े होते हैं जब खड़े होने की कीमत हो, हम किस सच को बचाते हैं जब सच बचाने में नुक़सान हो, हम किस प्यासे को पानी देते हैं जब पानी देना सत्ता के खिलाफ़ जाना हो, सलाम उस हुसैन को, जिसने दुनिया को यह सिखाया कि इंसान की असली औकात उसकी उम्र से नहीं, उसके उसूल से मापी जाती है, सलाम उस क़र्बला को, जहाँ शरीर हार गए मगर आत्मा ने पूरी मानवता को जीत लिया, सलाम उस प्यास को, जो आज तक हर ज़मीर वाले आदमी के गले में अटकी हुई है, और लानत हर उस यज़ीदियत पर, जो हर दौर में नए नाम, नए चेहरे, नई पोशाक और नए तर्क लेकर आती है, मगर भीतर से वही रहती है, अन्याय की बेशर्मा भूख, मुहर्रम शोक नहीं, स्मृति है, स्मृति नहीं, प्रतिरोध है, प्रतिरोध नहीं, इंसान होने की आखिरी शर्त है!

आज का सच

बेटियों का अपहरण करके, ले गए कुछ अगाधे हैं। लव जिहाद कहने वाले, अब क्यों चुप्पी साधे हैं।। खून क्यों नहीं खोल रहा है, क्यों कमज़ोर इरादे हैं। लुट रही हों जहाँ बेटियाँ, वहाँ कौनसे ब्याधे हैं।। दीन के हामी, धर्म के रक्षक, बने हुए धर्मादे हैं। लगता है ये भी तो सारे, राजनीति के प्यादे हैं।। आपदा में भी अवसर देखें, बाँटें आधे-आधे हैं। लगी दांव पर बेटी बीरा, बैठे चुप्पी साधे हैं।।

-सिद्दीक अहमद मेव



पूरे मुल्क में सबसे शांतिप्रिय समाज मुस्लिम समाज है। मुसलमानों को हर तरीके से परेशान करने की कोशिश किया जाता है लेकिन मुसलमानों ने कभी सब्र का दामन नहीं छोड़ा।



पिछले दिनों कामा मेवात से तशरीफ लाए निर्दलीय प्रत्याशी रहे सीए मुख्तार एहमद एवं उनकी टीम को छोटा मेवात (कन्नौद), धरमपुरी, साला, बालसमद के भ्रमण के दौरान मेव समाज के गणमान्य कार्यकर्ताओं द्वारा इनका पुष्पहारों से स्वागत किया गया, जिसकी चित्रमय झलकियां निम्नानुसार है



चित्र-कन्नौद समाजगणों के साथ।



चित्र-पिपलदा रमजान, अकरम मेव के निवास पर।



चित्र-कन्नौद में पूर्व विधायक कैलाश कुंडल जी के निवास पर



चित्र-बिचकुआ समाजगणों के साथ।



चित्र-पिपलदा में अकरम मेव के साथ।



चित्र-धरमपुरी (धार) के सदर हाजी आसिफ जमींदार के निवास पर।



साला (खलघाट) में इस्तकबाल किया। धार जिला कांग्रेस महामंत्री और ग्राम पंचायत साला के उपसरपंच जावेद खान मेव, आदिल खान सर, हाजी समीर खान, जाकिर खान, इकबाल खान, आसिफ खान, हाजी आशिक खान, डॉ रिज़वान खान, डॉ शादाब खान, फिरोज बाबा, गबु भाई, सरीफ खान, फाईन खान, सदाकत खान, अलमास खान, दानिश खान, बिलाल खान आदि सहित कई अन्य समाज जन मौजूद थे।



जावेद खान के बीमार वालिद की कुशलक्षेम पूछते हुए।



चित्र-बालसमद (कसरावद) मेव समाज के अलहाज डॉ. मेहरुदीन के निवास पर समाजगणों हाजी अब्दुल ठेकेदार, हाजी सिराज मेव, जावेद मेव, आसिफ मेव, सफदर ठेकेदार, अय्यूब भाई मेव (एबी स्टीचिंग), मो. शारिब एडवोकेट, अब्दुल हफीज बनारसी आदि के साथ।

न्यू मेव टाइम्स परिवार एवं मेव एजुकेशनल वेलफेयर अवेयरनेस ट्रस्ट इंदौर हज वापसी पर अपनी मुबारकबाद देता है



चित्र सिंगोली के हाजी असरफ हुसैन (गुड्डू), शहाना अंजुम, जेतुन बी, नाजिया हसन, शेजान खान एवं जफर मेव (बबलू)।



चित्र मंदसोर के हाजी नाहरु खान (एनके इंजीयनिंग) का इस्तकबाल करते साबिर मौलाना, निजामुद्दीन चिश्ती, सलीम मेव एवं जाकिर नेता।



मेव पंचायत उज्जैन द्वारा लखाहेड़ा में हज की वापसी पर स्वागत करते हुए शब्बीर हुसैन एवं साथी।



पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह राजा साहब जी देवास पहुंचे

देवास। आज नाहर दरवाजे पर पूर्व जनपद उपाध्यक्ष सलीम मामू बच्चू मामू राष्ट्रीय होटल देवास शहर कांग्रेस महामंत्री कल्लू भाई राष्ट्रीय की बहन एवं गुर्जर बापूचा सरपंच अफजल खान गब्बू भाई की माताजी का विगत दिनों इंतकाल हो गया था राजा साहब गमगीन परिवार में उनके निवास पर मिलने पहुंचे साथ में देवास शहर कांग्रेस अध्यक्ष प्रयास गौतम जी देवास जिला कांग्रेस अध्यक्ष मनीष चौधरी जी पूर्व महापौर जय सिंह ठाकुर जी रेखा वर्मा जी प्रदीप चौधरी जी देवास शहर कांग्रेस संगठन मंत्री जाहिद पठान साहब वरिष्ठ कांग्रेस नेता भगवान सिंह चावड़ा जी रमेश व्यास जी सुजीत सांगते जी जितेन सिंह मोंटू दरबार पंकज वर्मा जी शाहिद मोदी जी एवं शाहिद खान व कांग्रेस जन उपस्थित रहे।



पिछले दिनों मेव पंचायत तराना में सालना बैठक हुई और सर्व सहमति से 4थी बार सदर जनाब समद भाई मेव को बत्राया गया।

आपातकाल के स्याह दिन...

(पेज 2 का शेष)

रात को तीन बजे इंदिरा सोने चली गईं. ओम मेहता ने बरामदे में आकर निर्देश दिए कि अखबारों की बिजली काट दी जाए ताकि सुबह कोई अखबार न आए. राय ने यह भी सुना कि इंतजाम किए गए हैं कि कल सुबह कोई अदालत नहीं खुलेगी. उन्होंने एतराज किया. लेकिन ओम मेहता अड़े रहे तो राय ने इंदिरा के सहायकों से उन्हें जगाने को कहा.

इंदिरा को जगाया गया. वे बाहर आईं तो राय ने उन्हें सारी बात बताई. कहा कि बिजली काटना ठीक नहीं है और अदालतों को बंद रखना तो हद ही है. इंदिरा भीतर गईं. बीस मिनट बाद लौटीं. राय समेत सबको बुलाया और कहा कि बिजली नहीं कटेगी. अदालतें भी खुली रहेंगी.

सुबह अदालतें तो खुली रहीं, लेकिन ज्यादातर अखबारों की बिजली गायब रही. कुछ अखबार ही निकल पाए. यानी इंदिरा को अंधरे में रखकर काम करने की शुरुआत आपातकाल के पहले दिन से ही हो गई थी.

इंद्रकुमार गुजराल सूचना प्रसारण राज्य मंत्री थे. रात को दो बजे कैबिनेट सेक्रेटरी ने उन्हें फोन कर उठाया और कहा कि 6 बजे कैबिनेट की बैठक है. जब बैठक में इंदिरा ने ऐलान किया कि आपातकाल लागू कर दिया गया है और जयप्रकाश नारायण, मोरारजी देसाई और बाकी बड़े नेता गिरफ्तार कर लिए गए हैं, तो रक्षा मंत्री स्वर्ण सिंह ने कुछ सवाल उठाए.

बैठक से सब बाहर निकल रहे थे तो संजय बाहर खड़े थे. उन्होंने गुजराल से कहा कि सारे न्यूज़ बुलेटिन प्रसारित होने से पहले उनके पास भेजे जाएं. गुजराल ने कहा कि जब तक प्रसारित नहीं होते, न्यूज़ बुलेटिन गोपनीय होते हैं. इसलिए उन्हें नहीं भेजे जा सकते.

इंदिरा भी बगल में ही थोड़ी दूर थीं. उन्होंने संजय और गुजराल के बीच हो रही किचकिच सुनी तो पूछा कि क्या मामला है? गुजराल ने बता दिया. गुजराल घर लौटे और अपना इस्तीफा तैयार करने लगे.

तभी उन्हें प्रधानमंत्री निवास वापस बुला लिया गया. वहां इंदिरा नहीं थीं. वे दफ्तर चली गईं थीं. संजय थे. उन्होंने गुजराल से कड़क आवाज़ में पूछा कि प्रधानमंत्री का संदेश सुबह आकाशवाणी के

सभी वेव-लेंथ पर प्रसारित क्यों नहीं हुआ? गुजराल ने संजय से कहा कि अगर आपको मुझसे बात करनी है तो पहले शिष्टाचार सीखना होगा. आप मेरे बेटे से भी छोटे हैं और मैं आपको किसी भी बात का जवाब देने के लिए बाध्य नहीं हूं.

इंदिरा को पता चला कि गुजराल इस्तीफा दे रहे हैं तो उन्होंने उनसे लंबी बातचीत की. गुजराल ने कहा कि मैं सूचना प्रसारण नहीं संभालूंगा.

चितक-दार्शनिक जे. कृष्णमूर्ति आपातकाल लगने से नाराज़ थे. जब 24 अक्टूबर 1976 को वे विदेश से दिल्ली आए तो इंदिरा उनसे मिलने गईं. बातचीत में बताया कि हिंदू पंचांग के हिसाब से आज मेरा जन्मदिन है तो 80 साल के कृष्णमूर्ति ने इंदिरा का हाथ अपने हाथ में लिया और दोनों काफी देर खामोश बैठे रहे.

कृष्णमूर्ति ने पूछा कि आप भीतर से इतनी परेशान क्यों हैं? इंदिरा ने कहा कि हां, हूं. फिर बताने की कोशिश की कि पिछले सवा साल में देश में क्या-क्या हुआ? कृष्णमूर्ति कुछ नहीं बोले. बेचैन इंदिरा लौट गईं. महीने भर बाद 28 नवंबर को सुबह 11 बजे अचानक वे फिर कृष्णमूर्ति के पास पहुंचीं. सुरक्षाकर्मी भी साथ नहीं थे. एक घंटे वे संत कृष्णमूर्ति के पास रहीं. तब वहां मौजूद एक चश्मदीद ने लिखा है कि इंदिरा बाहर आईं तो आंसू उनके गाल पर थे.

कृष्णमूर्ति ने भी इस मुलाकात के बारे में किसी को ज्यादा नहीं बताया. इंदिरा ने बहुत बाद में अपनी एक बेहद पुरानी सहेली को बताया कि कृष्णमूर्ति से उस मुलाकात में वे इतना रोई, इतना रोई कि उन्हें पता ही नहीं कि कितना रोई. सहेली से उन्होंने कहा कि मैं अरसे से रोई नहीं थी. इस रोजे से मेरा जी कितना हल्का हो गया, मैं बता नहीं सकती.

24 अक्टूबर को कृष्णमूर्ति से मिलने के चार दिन बाद इंदिरा ने करीब-करीब तय कर लिया था कि वे आपातकाल हटाने और चुनाव कराने का ऐलान कर देंगी. लेकिन चौकड़ी ने ऐसा खेल खेला कि 5 नवंबर को लोकसभा का कार्यकाल बिना चुनाव के ही एक साल के लिए बढ़ा दिया गया. 28 नवंबर को कृष्णमूर्ति से मिलकर लौटने के बाद इंदिरा का यह फ़ैसला और दृढ़ हो गया कि वे चुनाव कराएंगी. अपने विश्वस्त लोगों से उन्होंने ज़ि़क़्र किया तो सबने विरोध

किया. संजय गांधी, बंसीलाल, सबने.

राँ के आरएन काव ने देश भर की राजनीतिक स्थिति का अध्ययन करने के लिए समय मांगा. कुछ हफ़्तों बाद उन्होंने इंदिरा से कहा कि चुनाव होंगे तो कांग्रेस बुरी तरह हार जाएगी. इसके बाद संजय ने जाकर इंदिरा से कहा कि चुनाव कराकर आप अपने जीवन की सबसे बड़ी ग़लती कर रही हैं. मुख्यमंत्रियों से पूछा तो उन्होंने भी तरह-तरह की आशंकाएं गिनाईं. लेकिन इंदिरा को कोई नहीं रोक पाया.

18 जनवरी 1977 को उन्होंने ऐलान कर दिया कि चुनाव होंगे. उसी दिन सभी विपक्ष नेता भी जेलों से रिहा कर दिए गए. किसी को यकीन ही नहीं हो रहा था. जयप्रकाश नारायण ने तब कहा था कि इंदिरा ने जो हिम्मत दिखाई है, बिरले ही दिखा सकते हैं. नेहरू की बेटी की अंतरात्मा ने संजय की मां के दिल पर जो जीत हासिल की, वह बेमिसाल है. इंदिरा में फ़ासीवादी गुणसूत्र थे ही नहीं, इसलिए वे यह कर पाईं.

आज यह कह देना तो बड़ा आसान है कि जवाहरलाल ने अपनी बेटी को विरासत सौंप दी, लेकिन कितने लोग यह जानते हैं कि एक पिता ने जेल के एकाकी जीवन में रह कर अपनी बेटी को चिट्ठियों के जरिये लोकतंत्र के कैसे ठोस संस्कार दिए थे? आज हिंदू-संस्कारों के स्वयंभू रक्षक हर महीने अपने 'मन की बात' सुना-सुनाकर जो संस्कार देश को दे रहे हैं, आप देख नहीं रहे?

जनतंत्र को अपने ठेंगे पर रखे घूम रहे लठैतों के इस दौर में इंदिरा का कद तो और भी सौ गुना बढ़ जाता है. इसलिए 51 साल पहले के आपातकाल के 633 दिनों पर खूब हायतौबा मचाइए, मगर पिछले 4,413 दिनों से भारतमाता की छाती पर चलाई जा रही अघोषित आपातकाल की चक्की के पाटों को नज़रअंदाज़ मत करिए.

दिल पर हाथ रखकर बताइए कि आज आप के कितने मौलिक अधिकार सचमुच शेष रह गए हैं? काशी की गंगा का जल आज जैसा भी कर दिया गया हो, लेकिन है तो गंगा का, सो यह जल हाथ में लेकर पूरी ईमानदारी से बताइए कि वे दिन तो चलिए काले थे, लेकिन ये 'अच्छे दिन' कैसे हैं?

(साभार)

प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों को सरकारी कॉलेजों के बराबर फीस लेने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता

नई दिल्ली। देश के प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों की मनमानी फीस और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए तय 8 लाख रुपये की आय सीमा के बीच के विरोधाभास को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने अपना अहम फैसला सुनाया है।

सर्वोच्च अदालत ने इस मामले में दायर याचिका को खारिज करते हुए स्पष्ट कर दिया है कि प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों को सरकारी कॉलेजों के बराबर फीस लेने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता।

कोर्ट की इस सख्त टिप्पणी से उन छात्रों को बड़ा झटका लगा है, जो महंगी फीस के कारण प्राइवेट कॉलेजों में एडमिशन लेने से वंचित रह जाते हैं।

‘प्राइवेट और सरकारी संस्थानों की तुलना संभव नहीं’

सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस बीवी नागरत्ना और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की पीठ ने मामले की सुनवाई करते हुए कई महत्वपूर्ण टिप्पणियां कीं।

पीठ ने स्पष्ट किया कि सरकारी संस्थानों को चलाने के लिए सरकार से भारी अनुदान मिलता है, जबकि प्राइवेट कॉलेज पूरी तरह से छात्रों से मिलने वाली फीस पर निर्भर होते हैं।

अदालत ने कहा कि केवल इसलिए

कि प्राइवेट कॉलेजों की फीस अधिक है, उन्हें सरकारी फीस ढांचे को लागू करने का आदेश नहीं दिया जा सकता।

जजों ने इस बात पर जोर दिया कि देश को अधिक डॉक्टरों की सख्त जरूरत है और प्राइवेट मेडिकल कॉलेज इसमें अहम भूमिका निभाते हैं।

यदि उन्हें पर्याप्त फीस लेने से रोका गया, तो चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान बुरी तरह प्रभावित होगा।

याचिका में उठाया गया था आय सीमा और महंगी फीस का मुद्दा

यह याचिका राजस्थान के रहने वाले हर्षवर्धन सिंह द्वारा दायर की गई थी।

याचिकाकर्ता ने कोर्ट के सामने अपना तर्क रखते हुए कहा था कि सरकार ने एं कोर्ट के लिए 8 लाख रुपये की वार्षिक आय सीमा तय की है, जिसका व्यावहारिक रूप से अब कोई मतलब नहीं रह गया है।

इसके पीछे की वजह बताते हुए उन्होंने कहा कि प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों की फीस प्रति वर्ष 18.9 लाख रुपये से लेकर 25 लाख रुपये तक पहुंच गई है।

ऐसे में जो छात्र 8 लाख की आय सीमा वाले एं श्रेणी के तहत आते हैं, वे

चाहकर भी इस महंगी मेडिकल शिक्षा का खर्च नहीं उठा सकते।

हालांकि, जस्टिस नागरत्ना ने इस तर्क पर कहा कि स्व-वित्तपोषित प्राइवेट संस्थानों को सरकारी नजरिए से नहीं देखा जा सकता।

गरीब छात्रों के लिए मौजूद हैं स्कॉलरशिप के विकल्प

सुनवाई के दौरान अदालत ने गरीब और मेधावी छात्रों के भविष्य को लेकर भी बात की।

जस्टिस नागरत्ना ने कहा कि यदि कोई छात्र प्राइवेट कॉलेज की भारी-भरकम फीस वहन नहीं कर सकता है, तो उसके लिए स्कॉलरशिप, सबवेंशन या अन्य वित्तीय सहायता के कई विकल्प मौजूद हैं, जिनका लाभ उठाया जा सकता है।

इससे पहले राजस्थान हाईकोर्ट भी प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों की मौजूदा फीस संरचना को वैध करार दे चुका है, क्योंकि इसे राज्य की फीस नियामक समिति द्वारा सुप्रीम कोर्ट के दिशा-निर्देशों के तहत ही तय किया गया था।

सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट के इस फैसले में दखल देने से साफ इनकार कर दिया, लेकिन भविष्य के लिए इस मामले से जुड़े किसी भी व्यापक कानूनी प्रश्न को विचार के लिए खुला रखा है।

साम्प्रदायिक सौहार्द की एक बेहद सुकून भरी खबर

बाड़मेर। देश में चल रहे तनाव और धार्मिक स्थलों पर हो रही कार्रवाइयों के बीच राजस्थान के बाड़मेर से सांप्रदायिक सौहार्द की एक बेहद सुकून देने वाली खबर सामने आई है। बाड़मेर की जनता ने हिंदू-मुस्लिम एकता की एक ऐसी नजीर पेश की है, जिसने न सिर्फ लोगों के दिलों में उम्मीद जगाई है, बल्कि पूरे देश को आपसी भाईचारे का एक कड़ा संदेश भी दिया है।

मायूसी के बीच जगी उम्मीद की किरण, नदीम खान ने इस वाक्य का जिक्र करते हुए एक भावुक और दमदार पोस्ट साझा किया है। उन्होंने बताया कि पिछले कुछ दिनों से देश के विभिन्न हिस्सों से मस्जिदों पर हो रही कार्रवाई की खबरों ने उन्हें अंदर तक झकझोर दिया था। मीडिया द्वारा इन कार्रवाइयों की रिपोर्टिंग में 'अवैध' जैसे शब्दों के लगातार इस्तेमाल और उस पर बहुसंख्यक समाज की खामोशी ने गहरी निराशा पैदा कर दी थी। हालात ऐसे बन गए थे कि भाईचारा, दोस्ती और मोहब्बत जैसे शब्दों पर से यकीन खत्म होने लगा था।

80 फीसदी हिंदू आबादी ने उठाई आवाज-लेकिन, बाड़मेर से आई तस्वीरों और खबरों ने इस पूरी निराशा को पलट कर रख दिया। बाड़मेर में चार मस्जिदों को ढहाए जाने के विरोध में स्थानीय जनता भारी तादाद में सड़कों पर उतर आई। इस शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन की सबसे बड़ी और ऐतिहासिक



बात यह रही कि इसमें 80 प्रतिशत से ज्यादा संख्या हिंदू समाज की थी। बाड़मेर के बहुसंख्यक समाज ने अपने मुस्लिम भाइयों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर इस कार्रवाई का कड़ा विरोध किया और शांति, सद्भाव व आपसी भाईचारे का पैगाम दिया।

आयोजकों का जताया आभार-नदीम खान ने इस ऐतिहासिक और शांतिपूर्ण प्रदर्शन के लिए बाड़मेर की आवाम का दिल से शुक्रिया अदा किया है। उन्होंने विशेष रूप से छोटे भाई खान मियां खनियानी, आजाद सिंह राठौड़ और बाड़मेर के उन तमाम दोस्तों को धन्यवाद दिया, जिनकी मेहनत से भाईचारे का यह कार्यक्रम मुमकिन हो सका।

पूरे मुल्क के लिए एक बड़ा सबक-यह घटना सिर्फ एक शहर का प्रदर्शन नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए एक नजीर है। पोस्ट के आखिर में यह उम्मीद जताई गई है कि काश पूरे देश की बहुसंख्यक आबादी बाड़मेर के लोगों से भाईचारे की यह अहम सीख ले सके। बाड़मेर की सड़कों से उठी इस आवाज ने साबित कर दिया है कि नफरत की आंधियों के बीच भी इंसानियत और एकता की जड़ें बेहद मजबूत हैं।

पहले की और आज की पैरेंटिंग में फ़र्क़

बागवानी में कोई छोटा पौधा या बेल सही सिम्ट और अपनी हुदूद में ही बढ़े, इसलिए उसके चारों तरफ़ बाड़ या बाँस की खपच्ची लगायी जाती है। यह सहारा भी होता है और अनुशासन की लगाम भी। यही बच्चों की परवरिश में भी होता है। 'बिना अनुशासन के समाजी साँड़ पैदा होते हैं, मेहनती और माहिर बेल नहीं'-यह मेरे एक मैथ्स के उस्ताद कहा करते थे।

आज कल घर में दो या अब तो सिर्फ़ एक ही पौधा (बच्चा) जनम लेता है। उस पौधे के जनम से पहले ही बाग़-ए-चमन सजा रहता है। बिना ज़रूरत के सब कुछ मिलता है। एक की जगह दो, यानी उस पौधे को जनम के कुछ दिन बाद से ही हक़ का एहसास दिलाने का काम शुरू हो जाता है। नाउ ए डेज इट गुड पैरेंटिंग?'।

हम बुढ़े हो रहे हैं, तो ग़ैर-मुतल्लिक (irrelevant) भी, इसलिए हमारी बातें इरेलेवेंट हैं। तालीमी इदारों में यह आम मंज़ूर है: उस्ताद खड़ा है और बच्चा उठने को तैयार नहीं; रास्ते में चार तलबा खड़े हैं, उस्ताद को खुद बच कर निकलना होगा; लिफ़्ट में जवान नस्ल धक्का-मुक्की करके चढ़ने को बेताब है, भले ही एक मंज़िल जाना हो। मंज़िल है कोई उस्ताद तालिबे-इल्म को डाँट दे या क्लास से बाहर निकाल दे। डाँट दो तो बच्चा 'बुली' हो जाता है या 'टारगेट' होने का इल्ज़ाम लगता है। यानी आज हक़ का एहसास और उसके लिए लड़ने की तालीम घर से मिल रही है। मिसिंग क्या है? समाजी फ़र्ज़ और आम तमीज़। अगर ग़लती से कोई उस्ताद अपने असल काम के लिए अनुशासन का सबक़ सिखा दे, तो चपरासी से लेकर नेता, अफ़सर, जज, ठेकेदार, कहीं का डायरेक्टर सब तुल पड़ते हैं उस्ताद या अपने किसी बड़े को

औक़ात दिखाने पर।

मैं हैरान हूँ, हम कैसी नस्ल चाहते हैं?

वो जो हर 7 मिनट में बिना संघर्ष के अपनी जान दे दे?

वो जो विदेश से अपने बाप के मरने पर सिर्फ़ पैसे भेज दे कि 'लाश निपटा देना'?

वो जो अपनी दोस्त का बलात्कार करके टुकड़े-टुकड़े करके फेंक जाए?

वो जो प्रिंसिपल को गोली मार दे?

वो जो कॉलेज के प्रोफ़ेसर की इल्लिजा से परेशान होकर क़त्ल कर दे या खुदकुशी कर ले?

वो जो सिर्फ़ तीन साल में अपने प्यार से तलाक़ अफ़्ज़ाई कर दे?

वो जो अपने माँ-बाप का क़त्ल कर दे ताकि संपत्ति का मालिक हो जाए?

और न जाने कितनी मिसालें हैं ?

एक इल्लिजा: अपने बच्चों को हक़ के एहसास के साथ फ़र्ज़ का एहसास भी कराइये, और यह वालिदैन (पेरेंट्स) के रवैये से आएगा। क्योंकि बच्चों को इस दुनिया के समंदर में अकेला तैरना है और सब कुछ 'favourable' नहीं मिलेगा, और आप हमेशा नहीं होंगे।

दूसरा आज देश के बदले हुए हालात में कैसे अपने आपको एडजस्ट करे कि वह आगे का जीवन अच्छे ढंग से बिता सके यह अशयोर करने की कोशिश करनी चाहिए और हाँ अल्लाह की रहमत पर यकीन ही बंदे की सबसे बड़ी ताकत है। -रईस अख़्तर



इरफ़ाना इक़बाल ने हिन्दू बुजुर्ग नारायणन का अंतिम संस्कार किया

कोझिकोड। हिंदू बुजुर्ग नारायणन जो पूर्व में आरएसएस कार्यकर्ता रह चुके थे, लंबे समय से ओरल कैंसर से जूझ रहे थे, करीब एक महीने पहले उन्हें एक दुकान की बरांडा में कमजोर व भूख से तड़पते हालत में पाया गया। नारायणन को कोझिकोड मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनकी मृत्यु हो गई। मौत की सूचना जब पुलिस ने नारायणन के रिश्तेदारों को शव लेने के लिए सूचित किया, तो नारायणन के परिवार वालों ने नारायणन का शव लेने से साफ़ इनकार कर दिया। नारायणन की दो पत्नियाँ, बच्चे और बहन में से कोई भी शव लेने या अंतिम संस्कार करने के लिए आगे नहीं आया। कोई हिन्दू संगठन भी आगे नहीं आया। ऐसे में स्थानीय मुस्लिम महिला इरफ़ाना इक़बाल ने पहल की। उन्होंने मुस्लिम समुदाय के लोगों को साथ लेकर नारायणन के अंतिम संस्कार की पूरी व्यवस्था की। इरफ़ाना इक़बाल की अगुवाई में मुस्लिम समुदाय के लोगों ने हिन्दू बुजुर्ग नारायणन के शव का अंतिम संस्कार किया।

क्या एक कंपनी का भारी निवेश भारत की गुलामी तय करने जा रहा है?

जेपी मॉर्गन का भारत में कुल निवेश और वित्तीय आवंटन सरकारी बॉन्ड (JPMorgan GBI-EM Index): 22 बिलियन से 25 बिलियन (लगभग ₹. 1.8 से ₹2 लाख करोड़)। जून 2024 से भारतीय सरकारी बॉन्ड्स को अपने ग्लोबल इंडेक्स में शामिल करने के कारण आया पैसिव फंड प्रवाह। इसमें भारत का कुल वेटेज 10% है।

भारतीय शेयर बाजार (Equity Portfolio): ₹. 1,75,987 करोड़ (लगभग \$21 बिलियन से अधिक)। विभिन्न फंडों, कस्टोडियन बैंक खातों और वैश्विक संस्थाओं के माध्यम से भारतीय शेयर बाजारों में कुल निवेश।

अप्रत्यक्ष वैश्विक फंड पाइपलाइन (M&A Clients): \$100 बिलियन से \$150 बिलियन। जेपी मॉर्गन के वैश्विक नेटवर्क के माध्यम से भारतीय कॉर्पोरेट सौदों, स्टार्टअप्स और बुनियादी ढांचे के लिए प्रबंधित फंड। यह फंड भारत में खर्च किया जा रहा है।

कॉर्पोरेट ऑपरेशन और बुनियादी ढांचा: मुंबई, बेंगलुरु और हैदराबाद में अत्याधुनिक वैश्विक तकनीकी केंद्रों (Global Tech Centers) का निर्माण और वहां 60,000 से अधिक स्थायी कर्मचारियों की वर्कफोर्स।

शीर्ष भारतीय कंपनियाँ और सेक्टर-वार इक्विटी निवेश (Portfolio Allocations)

जेपी मॉर्गन के प्रमुख भारत-केंद्रित फंड और उनकी कस्टोडियन शाखा मुख्य रूप से इन सेक्टरों और ब्लूचिप कंपनियों में अपनी हिस्सेदारी केंद्रित रखती है:

1. वित्तीय सेवाएं (Financial Services)

ICICI Bank Ltd.: कुल पोर्टफोलियो परिसंपत्तियों का लगभग 9.0%

HDFC Bank Ltd.: कुल पोर्टफोलियो परिसंपत्तियों का लगभग 8.2%

Kotak Mahindra Bank Ltd.: कुल पोर्टफोलियो परिसंपत्तियों का लगभग 5.0% 2.

2. ऑटोमोबाइल और मैन्युफैक्चरिंग:-

Mahindra & Mahindra Ltd.: कुल पोर्टफोलियो परिसंपत्तियों का लगभग 5.3%

Ashok Leyland Ltd.: बड़ी कस्टोडियन शेयरहोल्डिंग और इक्विटी ब्लॉक अर्थात 11.30% शेयर

3. ऊर्जा और प्रौद्योगिकी

Reliance Industries Ltd.: कुल पोर्टफोलियो परिसंपत्तियों का लगभग 4.4%

Tata Consultancy Services Ltd. (TCS): कुल

पोर्टफोलियो परिसंपत्तियों का लगभग 2.9%

Wipro Ltd.: महत्वपूर्ण दीर्घकालिक इक्विटी हिस्सेदारी यानि 3% शेयर

4. फार्मास्युटिकल और अन्य सेवाएं

Dr. Reddy's Laboratories Ltd.: कुल पोर्टफोलियो परिसंपत्तियों का लगभग 3.4%

Bajaj Finserv Ltd.: कुल पोर्टफोलियो परिसंपत्तियों का लगभग 3.2%

Computer Age Management Services (CAMS): रणनीतिक संस्थागत निवेश अर्थात 2.81% शेयर

जेपी मॉर्गन ने भारत में 60,000 वर्क फोर्स तैयार की है व आगे 150 बिलियन डॉलर निवेश करके देश पर कब्जा करना है इसलिए हर कीमत पर सुविधाभोगी जमात अर्थात उाह को सपना दिखाकर अपने नए एजेंटों को सत्ता में बिठाना है। बुद्धों के खिलाफ आक्रोश बहुत है और कहीं दूसरों की तरफ भारत गमन न कर लें इसलिए जल्दबाजी में है।

जॉर्ज सोरोस के प्यारे अंधभक्तों जेमी डिमन रूपी नया मालिक मुबारक हो! देश को अराजकता में धकेलकर जेपी मॉर्गन अपने नए एजेंटों को सत्ता दिलवाने के लिए कॉकरोच जनता पार्टी लेकर आ रहे हैं!

-प्रेम सिंह प्रयाग



इंतकाल

नई दिल्ली। पिछले दिनों मेवाती बिरादरी के जनाब एम. हसन खांशाहिन बाग वालों की अम्मी का इंतकाल हो गया। जिन्हें स्थानीय कब्रस्तान में सुपुर्देखाक किया गया। न्यू मेव टाइम्स परिवार अल्ला से दुआ करता है कि वे उन्हें जन्नतुल फिरदौस अता फरमाए।

खवातीन के लिए खतरे की घंटी

कल दोपहर में मैं कैलूला (दोपहर में आराम) करने के लिए लेटा ही था कि मेरी बीबी के मोबाइल पर WhatsApped पर "hi" का मैसेज आया। मेरी बीबी न तो अनजान नंबर से फोन उठाती है और न ही किसी अनजान मैसेज का जवाब देती है, इसलिए उसने मुझे बताया कि देखो किसका मैसेज है।

मैंने देखा तो किसी गैर-मुस्लिम की DP लगी हुई थी। प्रोफाइल खोलकर देखा तो नाम हिंदुवाना था और नंबर के नीचे इस्लाम की बेटियाँ लिखा हुआ था। मैं हैरान हुआ कि इसके पास नंबर कैसे पहुंचा। जांच करने पर पता चला कि मेरी बीबी जिन ग्रुपों में शामिल है, उनमें से तीन ग्रुपों में वह आदमी भी मौजूद है-

इस्लाम की बेटियाँ, ब्यूटी कोर्स और खवातीन मसाइल ग्रुप।

फिर मैंने सोचा कि इस्लाम की बेटियाँ ग्रुप के एडमिन से कहूं कि आपके ग्रुप में गैर-मुस्लिम भी हैं, उन्हें निकाल दें। जब मैंने ग्रुप की जानकारी देखी तो एडमिन के सामने लिखा था। उस पर क्लिक किया तो प्रोफाइल में नीचे गौरव कुमार लिखा हुआ था। तब मेरा दिमाग नका। मैंने उसे फोन किया लेकिन उसने फोन नहीं उठाया।

कुछ देर बाद उसकी तरफ से फोन आया, मैंने जैसे ही हेलो कहा, फोन कट गया। कई बार फोन करने पर उसने फोन उठाया। नाम पूछा तो उसने बताया गौरव कुमार। मैंने पूछा, क्या आप 'इस्लाम की बेटियाँ' ग्रुप चलाते हैं? इतना सुनते ही उसने नहीं कहकर फोन काट दिया और अब फोन नहीं उठा रहा है।

एक खास बात यह है कि ग्रुप में कोई काबिले सवाल चीज़ नहीं थी। उसमें सिर्फ अच्छी-अच्छी बातें, कुरान के तरजमें और हदीस वगेरह ही शेयर की जा रही थीं।

अब ज़रा सोचिए, RSS वाले ही होंगे जो इस्लाम के नाम पर ग्रुप लिंक बनाते हैं और एसा नाम रखते हैं कि जिसमें लड़कियाँ और औरतें ही शामिल हों

जैसे-इस्लाम की बेटियाँ, ऑनलाइन शॉपिंग, खवातीन मसाइल, ब्यूटी टिप्स, ब्यूटी कोर्स, घरेलू समस्याओं का समाधान, फ्री मेहंदी कोर्स, फ्री सिलाई कोर्स।

फिर उसमें एक-एक को टारगेट करके पर्सनल पर मैसेज करते हैं इस तरह हमारी माँए और बहनें भगवा लव ट्रेपका शिकार हो जाती है

मेरी सभी मुसलमान भाइयों और बहनों से गुज़ारिश है कि जिस ग्रुप के बारे में आप अच्छी तरह नहीं जानते, उसमें हरगिज़ शामिल न हों। और अगर पहले से ऐसे किसी ग्रुप में हैं तो उसे फोरन छोड़ दें।

पासपोर्ट नागरिकता का सबूत नहीं है

नई दिल्ली : लेखक और गीतकार जावेद अख्तर ने बुधवार को विदेश मंत्रालय (MEA) के उस बयान की आलोचना की जिसमें कहा गया था कि पासपोर्ट नागरिकता का सबूत नहीं है। उन्होंने इस बयान को बेतुका बताया। उनकी यह प्रतिक्रिया तब आई जब ईके अधिकारियों ने कहा कि पासपोर्ट यात्रा के लिए सिर्फ एक दस्तावेज है, न कि नागरिकता का सबूत। X पर एक पोस्ट में जावेद अख्तर ने सवाल उठाया कि अगर अधिकारी पूरी तरह से संतुष्ट नहीं थे कि पासपोर्ट होल्डर भारतीय नागरिक है तो पासपोर्ट कैसे जारी किए जा सकते हैं।

उन्होंने लिखा, 'विदेश मंत्रालय का कहना है कि पासपोर्ट यात्रा के लिए एक दस्तावेज है, न कि नागरिकता का सबूत। सच में तो क्या वे कुछ लोगों

को यह यात्रा दस्तावेज जांच किए बिना दे रहे हैं कि वह भारतीय नागरिक है या नहीं यह बेतुका है।'

जब किसी ने बताया कि आधार, वोटर आईडी और पैन कार्ड भी नागरिकता का सबूत नहीं हैं, तो उन्होंने उस यूजर को जवाब देते हुए कमेंट किया, 'सिस्टम में कौन इन अवैध प्रवासियों को ऐसी बिना शर्त मदद दे रहा है? ऐसे बुरे हालात में, वे नकली और असली नागरिकों के बीच कैसे फर्क करते हैं, सिवाय किसी छोटे-मोटे अधिकारी की मनमर्जी के?'

MEA ने क्या कहा?

14वें पासपोर्ट सेवा दिवस पर, MEA ने कहा कि पासपोर्ट मुख्य रूप से यात्रा के दस्तावेज हैं जिन्हें सरकार अंतरराष्ट्रीय यात्रा को आसान बनाने के लिए जारी करती है, और केवल पासपोर्ट होने से नागरिकता साबित

नहीं होती। इस बयान ने X पर एक बड़ी बहस छेड़ दी कि नागरिकता का पक्का सबूत क्या है। यह मुद्दा इसलिए चर्चा में आया क्योंकि किसी देश में पासपोर्ट केवल उस देश के नागरिकों को जारी किए जाते हैं, जबकि ईका कहना है कि यह दस्तावेज खुद नागरिकता तय नहीं करता।

इस साल की शुरुआत में, वोटर लिस्ट के स्पेशल इंटेसिव रिविजन पर सुनवाई के दौरान, सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि आधार नागरिकता का पक्का सबूत नहीं है और यह केवल पहचान का दस्तावेज है। वोटर आईडी कार्ड को भी नागरिकता का दस्तावेज नहीं माना जाता है और यह मुख्य रूप से पहचान और निवास का दस्तावेज है जिसका इस्तेमाल वोट देने के अधिकार का प्रयोग करने के लिए किया जाता है।

बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने की जरूरत



इंदौर। एसोसिएशन ऑफ मुस्लिम प्रोफेशनल्स (AMP) के इंदौर चैप्टर द्वारा शिक्षा, रोजगार और सशक्तिकरण को लेकर एक सेमिनार का आयोजन इस्लामिया करीमिया कॉलेज, इंदौर में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता

इंदौर स्टेट सेक्रेटरी सफाअत अजमेरी ने की।

मुख्य वक्ता के रूप में AMP प्रेसिडेंट आमिर इदरीसी ने शिक्षा और रोजगार के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि समाज की तरक्की के

लिए शिक्षा को प्राथमिकता देना जरूरी है।

कार्यक्रम में AMP के कोर टीम मेंबर सुबूर अहमद ने बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर अपने विचार रखे और कहा कि शिक्षा के माध्यम से समाज को बेहतर दिशा दी जा सकती है।

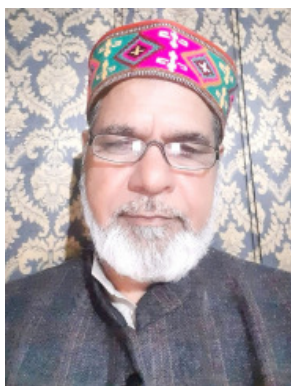
AMP मध्य प्रदेश स्टेट हेड रफत इकबाल ने संगठन की गतिविधियों और समाज के लिए किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी। भोपाल चैप्टर हेड नबील बारी और एएमपी इंदौर चैप्टर हेड फैज़ ने भी शिक्षा एवं सामाजिक विकास के क्षेत्र में मिलकर कार्य करने पर जोर दिया।

कार्यक्रम में शिक्षा, रोजगार, स्किल डेवलपमेंट और समाज के सशक्तिकरण से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई। AMP इंदौर चैप्टर ने संकल्प लिया कि मजबूत साथियों के सहयोग से समाज को प्रगति और बेहतर भविष्य की ओर ले जाने के लिए निरंतर प्रयास जारी रहेंगे।

सदीक अहमद मेव : इतिहास, साहित्य और शांति के सशक्त हस्ताक्षर

नूह। हरियाणा के सुप्रसिद्ध प्रगतिशील लेखक, इतिहासकार एवं साहित्यकार श्री सदीक अहमद मेव ने अपनी लेखनी के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन के समग्र इतिहास को जन-

और सहयोग भी प्रदान किया है। शांति, सद्भाव, राष्ट्रीय एकता और भारत-पाक मैत्री के इस जनांदोलन को सशक्त बनाने में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है।



जन तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। विशेष रूप से मेवात के गौरवशाली इतिहास, 1857 के स्वतंत्रता संग्राम तथा महात्मा गांधी से जुड़े अनेक प्रेरणादायक और ऐतिहासिक प्रसंगों को उन्होंने अपनी पुस्तकों में अत्यंत शोधपूर्ण और

प्रामाणिक ढंग से प्रस्तुत किया है। श्री सदीक अहमद मेव आगाज़-ए-दोस्ती अमन यात्रा के संस्थापक वरिष्ठ सदस्यों में से हैं। उन्होंने इस यात्रा को केवल वैचारिक नेतृत्व ही नहीं दिया, बल्कि निरंतर अपना संरक्षण, मार्गदर्शन

इस वर्ष की यात्रा को लेकर भी वे अत्यंत उत्साहित हैं। उनका मानना है कि ऐसी यात्राएँ इतिहास के वे मील के पत्थर हैं, जिनका वास्तविक मूल्यांकन आने वाली पीढ़ियाँ करेंगी और जिन्हें शांति, सौहार्द तथा मानव एकजुटता के आंदोलनों की अमूल्य

धरोहर के रूप में याद रखा जाएगा। आगाज़-ए-दोस्ती परिवार उनकी प्रेरणा, संरक्षण और निरंतर सहयोग के लिए उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है तथा उनके स्वस्थ, दीर्घ और सक्रिय जीवन की मंगलकामना करता है।

महाराष्ट्र में बिना नोटिस धार्मिक स्थलों की तोड़फोड़ पर चिंता, तहफ्फुज-ए-औकाफ फोरम ने वक्फ बोर्ड से तत्काल सर्कुलर की मांग की

औरंगाबाद : तहफ्फुज-ए-औकाफ फोरम ने महाराष्ट्र में मस्जिदों, दरगाहों और कब्रिस्तानों को बिना पूर्व सूचना के तोड़े जाने पर गहरी चिंता जताते हुए महाराष्ट्र स्टेट वक्फ बोर्ड से तुरंत राज्य-स्तरीय अनिवार्य सर्कुलर जारी करने की मांग की है।

फोरम के डायरेक्टर राशिद रशीद सिद्दीकी ने वक्फ बोर्ड के चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर और जिला वक्फ अधिकारी को एक आधिकारिक पत्र भेजा है। पत्र में कहा गया है कि पिछले 45 दिनों में पूरे देश में 23 से ज्यादा मुस्लिम धार्मिक स्थलों को ध्वस्त किया गया है और अब महाराष्ट्र में भी इसी तरह की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं।

हाल की घटनाओं का विवरण

पत्र में पिछले कुछ हफ्तों में हुई चार घटनाओं का जिक्र किया गया है। 19-20 मई 2026 को मुंबई के बांद्रा ईस्ट में वेस्टर्न रेलवे अधिकारियों ने दो मस्जिदें गिरा दीं। 2 जून 2026 को गोंगांव, मुंबई की ओर कॉलोनी में 70 साल पुरानी हजरत सैयद बरकत अली शाह पीर बाबा दरगाह को ध्वस्त कर दिया गया। इसके बाद 3-4 जून 2026 को पुणे के बोपोड़ी में करीब 100 साल पुरानी हजरत शम्सुद्दीन कादरी दरगाह गिराई गई। 8 जून 2026 को मीरा-भायंदर में नूरी मस्जिद को भी तोड़ दिया गया।

फोरम का कहना है कि इनमें से ज्यादातर ढांचे वक्फ बोर्ड में रजिस्टर्ड हैं या कई दशकों से मौजूद हैं। दुख की बात है कि किसी भी मामले में वक्फ बोर्ड, जिला वक्फ अधिकारी या

रजिस्टर्ड मुतवल्ली को पहले से नोटिस नहीं दिया गया।

फोरम की मांगें

तहफ्फुज-ए-औकाफ फोरम ने वक्फ बोर्ड से मांग की है कि डिवीजनल कमिश्नर, कलेक्टर, नगर निगम, रेलवे, वन विभाग और ईके समेत सभी संबंधित विभागों के लिए एक विस्तृत सर्कुलर जारी किया जाए। फोरम चाहता है कि सर्कुलर में यह अनिवार्य किया जाए कि किसी भी रजिस्टर्ड वक्फ संपत्ति या धार्मिक ढांचे पर कार्रवाई से पहले वक्फ बोर्ड, जिला वक्फ अधिकारी और मुतवल्ली को सुप्रीम कोर्ट के 13 नवंबर 2024 के फैसले के मुताबिक कम से कम 15 दिन का लिखित नोटिस दिया जाए। साथ ही संबंधित पक्ष को निजी सुनवाई का मौका और कार्रवाई से पहले तर्कपूर्ण लिखित आदेश भी दिया जाए।

सभी समुदाय एकजुट

फोरम ने साफ किया कि यह मुद्दा किसी एक मसलक तक सीमित नहीं है। तहफ्फुज-ए-औकाफ फोरम के तहत सुन्नी, शिया, दाऊदी बोहरा और आगा खानी समुदाय के विंग भी इस मांग का समर्थन कर रहे हैं, क्योंकि आशंका है कि भविष्य में किसी भी समुदाय के धार्मिक स्थलों को इसी तरह निशाना बनाया जा सकता है।

यह पत्र औरंगाबाद के किला-ए-अर्क, मर्दाना महल से जारी किया गया और इसकी कॉपी जिला वक्फ अधिकारी, छत्रपति संभाजीनगर को भी भेजी गई है। फोरम ने वक्फ बोर्ड से इस मामले में तत्काल हस्तक्षेप की अपील की है।

अपील

जैसा कि आप जानते हैं पिछले 33 सालों से न्यू मेव टाइम्स अखबार कौम की आवाज बन पूरे मुल्क के मेवों को जोड़ने एवं उनके सुख-दुख की खबरें निःशुल्क प्रकाशित करता आ रहा है। अतः अपनी अभी तक की सहयोग राशि एवं विज्ञापन शुल्क निम्नलिखित बैंक के खाते में जमा कराकर कौम की आवाज को मजबूती दें।

बैंक-अपेक्स बैंक, इंदौर (MPSCB) A/c No. 187001557250
IFSC : CBI No. MPABAA MICR 45228102, Branch Code-9

ADMISSIONS OPEN FOR NEET X, XI, XII & DROPPER BATCHES

मध्यभारत में NEET के लिये सबसे विश्वसनीय संस्थान !



DR. PUNEET GUPTA
Director (Academics)
Head of Biology



MR. RAEES KHAN
Director (Academics)
Head of Chemistry

7000 + MBBS Selections

MEDISQUAD CLASSES PVT. LTD.

Premium Institute for NEET, XI & XII

Contact : **0731-4988810**
9425074587 | 9827320022

Victory Chamber, 4-A, Ratlam Kothi,
Near Geeta Bhawan Square, Indore

सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक मो. हनीफ चिश्ती मेव के लिए स्वास्तिक प्रिंटिंग प्रेस द्वारा राजा ऑफसेट प्रिन्टर्स, नेहरू नगर, इन्दौर से मुद्रित होकर, २५, मेवाती मोहल्ला, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित।
मो. 9425032443, प्रसार प्रमुख- लाखनसिंह यादव (किसी भी वाद-विवाद में न्याय का क्षेत्र इन्दौर रहेगा।) Email-newmeotimes@gmail.com (*पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)